International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 474-476

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 474-476
www.allresearchjournal.com
Received: 19-12-2015
Accepted: 22-01-2016

डॉ. गीता यादव
ऐसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
डी.ए.वी. महिला महाविद्यालय
कोसली

Correspondence
डॉ. गीता यादव
ऐसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
डी.ए.वी. महिला महाविद्यालय
कोसली

भगतसिंह की वैचारिक परंपरा और पाश का काव्य

डॉ. गीता यादव

शोध–आलेख सार
पाश काव्य में एक विद्रोही व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते हैं, जैसे भगतसिंह राजनीति में। भगतसिंह मूलतः एक राजनीतिक कार्यकर्ता थे, यद्यपि उनकी साहित्यिक समझ अत्यधिक साफ थी। पाश मूलतः एक सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे, एक कवि थे, लेकिन उनकी राजनीतिक समझ बहुत साफ थी। फाँसी से पहले भगतसिंह ने पंजाब के राज्यपाल को लिखे एक पत्र में कहा था– युद्ध की स्थिति मौजूद है और तब तक रहेगी जब तक हमारी मेहनतकश भारतीय और हमारी प्राकृतिक सम्पदाएँ, मुट्ठी भर परजीवियों द्वारा शोषित होती रहेगी। चाहे वे विशुद्ध ब्रिटिश पूँजीवादी हो या मिश्रित ब्रिटिश एवं भारतीय या पूर्ण रूप से भारतीय। पाश के काव्य को पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानों बीच का समय ठहर गया हो और भगतसिंह की शहादत के बरसों बाद उसी मिजाज और चेतना के साथ, उसी बिंदु से, अपने संसाधनों को नौकरशाही, लाल फीताशाही, पूँजीपतियों और इन सबके संरक्षक राजनीतिक जमात से बचाने के लिए वही लड़ाई फिर शुरू हो गई हो।

मुख्य–शब्दः साहित्यिक, राजनीतिक, क्रांतिकारी, पूँजीवादी, साम्राज्यवादी।

मूल प्रतिपादन
'भगतसिंह होने का अर्थ' लेख में पाश ने भगतसिंह के लिए लिखा था– 'पंजाब के चिंतन प्रवाह को उसकी देन, सांडर्स को मारने, असेम्बली में बम फेंकने, फाँसी चढ़ने से भी कहीं बड़ी है। भगतसिंह ने पहली बार पंजाब को पशुता, पहलवानी और जहालत से हटाकर बौद्धिकता की ओर मोड़ा। उसने पंजाबियों के लिए बुद्धि विकास के दरवाजे खोल दिए।'[1] और पाश के लिए रामकुमार कृषक ने लिखा था– 'पाश एक यादगार है। क्रांतिकारी संस्कृति कर्म की सबसे नई कड़ी। भगतसिंह की शहीदी परंपरा का रागात्मक विस्फोट।'[2] यह परंपरा न केवल पंजाब की मिट्टी से जुड़ा होने की है अपितु सम्राज्यवादी ताकतों से लड़ने की भी है। भगतसिंह आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे पर बहुत व्यापक चिंतन के साथ। उस चिंतन में मात्र भौगोलिक स्वतंत्रता ही नही थी मानसिक, आत्मिक और आर्थिक स्वतंत्रता भी थी। भगतसिंह आजादी की लड़ाई लड़ते हुए संभवतः यह देख पा रहे थे कि भारत एक गुलामी से निकल कर दूसरी गुलामी के चंगुल में फँसेगा क्योंकि प्रहार जड़ों पर हो नही रहा था। भारत की पराधीनता की जड़ें यदि एक ओर हमारी उदासीनता, अशिक्षा और अंधविश्वास से जुड़ी हुई थी तो दूसरी ओर ब्रिटिश या अन्य विदेशी आक्रमणकारियों और भारतीय शासकों की साम्राज्यवादी सोच से। फाँसी से पहले भगतसिंह ने पंजाब के राज्यपाल को लिखे एक पत्र में कहा था– 'युद्ध की स्थिति मौजूद है और तब तक रहेगी जब तक हमारी मेहनतकश भारतीय और हमारी प्राकृतिक सम्पदाएँ, मुट्ठी भर परजीवियों द्वारा शोषित होती रहेगी। चाहे वे विशुद्ध ब्रिटिश पूँजीवादी हों या मिश्रित ब्रिटिश एवं भारतीय या पूर्ण रूप से भारतीय।'[3] पाश को पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानों बीच का समय ठहर गया हो और भगतसिंह की शहादत के बरसों बाद उसी मिजाज और चेतना के साथ, उसी बिंदु से, अपने संसाधनों को नौकरशाही, लाल फीताशाही, पूँजीपतियों और इन सबके संरक्षक राजनीतिक जमात से बचाने के लिए वही लड़ाई फिर शुरू हो गई हो। भगतसिंह भी मानते थे कि यह युद्ध न तो हमसे शुरू हुआ है और न ही हमारे जीवन के साथ समाप्त होगा इसलिए पाश लिखते हैं–

'हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए
हम चुनेंगे साथी, जिंदगी के टुकड़े।'[4]

यह बात अपने आपमें विडम्बना पूर्ण है कि स्वतन्त्र भारत में लड़ी जाने वाली कोई लड़ाई, कोई संघर्ष ऐसा भी होगा जो उदास मौसम और गुलाम इच्छाओं के लिए हो, परन्तु ऐसा है और इसीलिए युद्ध है, क्रांति है। भगतसिंह क्रांति का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–

'क्रांति से हमारा तात्पर्य रक्तरंजित संघर्ष नहीं और न ही इसमें व्यक्तिगत बदला लेने की कोई जगह है। क्रांति से हमारा मतलब है कि वर्तमान चीजें जो जाहिर तौर पर अन्याय पर आधारित हैं, अवश्य बदलनी चाहिए।'[5] भगतसिंह और पाश का युद्ध जायज है क्योंकि यह साम्राज्यवादी और पूँजीवादी ताकतों के विरूद्ध अपने हितों की, संसाधनों की रक्षा करने के लिए है। यह युद्ध दूसरे के घर पर, दूसरे राष्ट्र पर कब्जा करने के लिए नहीं अपितु अपने घर की रक्षा करने के लिए है, इसलिए जायज है। यह युद्ध वह स्थूल युद्ध नही है जो सीमाओं पर लड़ा जाता है– जो समुंद्र और आसमान में लड़ा जाता है। यह रोजमर्रा के जीवन में २४ घंटों, आठों पहर लड़ा जाने वाला युद्ध है। यह युद्ध आत्महत्याएं करते हुए किसानों, बढ़ी हुई फीसों को भरने में असमर्थ छात्रों, दुर्भावना और भेद–भावपूर्ण दृष्टि को झेलते हुए स्त्रियों का है। पाश लिखते हैं–

'क्रांति कोई दावत नही, नुमायश नही
मैदान में बहती नदी नही
वर्गों की, रूचियों की दरिंदगी भरी भिडंत है
मरना है, मारना है
और मौत को खत्म करना है।'[6]

इस दरिंदगी की इंतहा है कि इस देश में माताएँ रोटी के लिए अपने बच्चों तक को बेच देती हैं और आदिवासी पेड़ों की छालों को पीसकर खाने को विवश हैं। पाश के शब्दों में–

'उनके पास, सिवाय पेट के, कोई समस्या नही
और वह भूख लगने पर
अपने अंग भी चबा सकते हैं।'[7]

अपने ही अंग चबा लेने की नौबत जो लोग ले आए हैं पाश उन्हे बख्शने के लिए तैयार नहीं– चाहे वे सत्ता में कितने ही ऊँचे पदों पर क्यों न हों? पाश की बहुत सी कविताएं ऐसी हैं जो उनके समय के सबसे ताकतवर राजनीतिक लोगों के खिलाफ उनका नाम लेकर लिखी गई हैं। उनका काव्य व्यवस्था के विरोध में सत्ता से सीधा संवाद है– बगैर किसी लाग–लपेट के, भय के। वे लिखते हैं–

'यह इंदिरा जिसने तुम्हें मौत का पैगाम भेजा है
स्विट्जरलैंड में जन्मी, लंदन की बेटी है
इसकी साड़ी में डालर है, इसकी अंगिया में रूबल है
इसे मेरे देश की कहना, मेरे देश की हेठी है।'[8]

भूख, गरीबी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से जूझता सारा देश जब दिल्ली में बैठे सत्ताधीशों और संसद में बैठे जनप्रतिनिधियों की ओर आशा भरी दृष्टि से देखता है कि वे जन–कल्याण की नीतियाँ बनायेंगे और देश का भला करेगें तब संसद व्यक्तिगत राग–द्वेष तथा वोट बैंक की तुष्टिकरण का केन्द्र बनकर उभरती है। जब जनता ये देखती है कि कैसे ये जन–प्रतिनिधि जो अपने वेतन–भत्तों में वृद्धि के लिए एकजुट हो जाते हैं, वे लोक कल्याणकारी नीतियाँ बनाने के समय अलग–अलग सुर में बात करते हैं तब मोह–भंग का जो रूप जनता के मन में पैदा होता है, पाश उसकी सही अभिव्यक्ति करते हैं–

'मैने टिकट खरीदकर
आपके लोकतंत्र का नाटक देखा है
अब तो मेरा प्रेक्षागृह में बैठकर
हाय–हाय करने और चीखें मारने का
हक बनता है।'[9]

इस जनविमुख व्यवस्था के लिए पाश के मन में भयंकर आक्रोश है। इस व्यवस्था के लिए उनके पास प्रश्न हैं और उनके उत्तर भी। जिज्ञासाएँ हैं और उनकी पूर्ति भी, पर संदेह कहीं नहीं। सब कुछ साफ–स्पष्ट। 'धूमिल' रोटी से खेलने वाले जिस तीसरे आदमी को खोजते हुए देश की संसद से प्रश्न करते हैं और प्रत्युत्तर में उसे मौन पाते हैं वही प्रश्न पाश भी करते हैं–

'कौन है
जो दूध, गेहूँ और कविता तक को
हमारे खिलाफ हमेशा कर देता है।'[10]

और उत्तर भी देते हैं–

'जहरीली शहद की मक्खी की ओर उँगली न करें
जिसे आप छत्ता समझते हैं
वहाँ जनता के प्रतिनिधि रहते हैं।'[11]

ऐसी ही परिस्थितियों और मानसिकता के कारण भगतसिंह ने एसेंबली में बम फैंके थे क्योंकि वे मानते थे कि ब्रिटिश सरकार दुनिया की सबसे दमनकारी सरकार है। पाश भी अन्याय और शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को तहस–नहस करने के लिए नक्सलबाड़ी आंदोलन से जुड़े और इसलिए अनेकों बार जेल भी गए। देश में चूँकि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषमता है इसलिए गृह–युद्ध, नक्सलवाद और कभी–कभी आतंकवाद तक की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अपने समकालीन समाज और समय का सूक्ष्म अध्ययन और चिंतन–मनन उन्होने किया। उनकी एक कविता 'हमारे समय में' कई समकालीन समस्याओं का यथार्थ और मार्मिक चित्रण है–

'यह सब कुछ हमारे ही समयों में होना था
धूप से तिड़की हुई दीवारों के परखचों
और धुएँ को तरसते चूल्हों ने
हमारे ही समय का गीत बनना था
––––––––––
मेरे–आपके दिलों की सड़क के मस्तक पर जमना था
रोटी मांगने आए अध्यापकों के मस्तक की नसों का लहू
दशहरे के मैदान में
गुम हुई सीता नही, बस तेल का टिन माँगते हुए
रावण हमारे ही बूढ़ों को बनना था
अपमान वक्त का हमारे ही समयों में होना था।'[12]

पर परेशानी यह है कि यह समय बहुत लंबा खींच गया। यह समय भगतसिंह के समय में था, पाश के समय में भी था और आज भी है। कहीं कुछ नही बदलता। अगर कुछ बदलता है तो वे हैं सरकारें– अपने प्रशासन और क्रिया–कलापों से जन–मानस की इस भावना को और पुख्ता करते कि– 'इससे तो पहले के शासक अच्छे थे/अंधे थे/पर राज तो करते थे।' नही तो क्या कारण है कि 'आपातकाल' को बहुत से बुद्धिजीवियों और विचारकों ने अंग्रेजी शासन से भी बदतर माना। पाश भी एक नागरिक और एक संवेदनशील कवि होने के नाते अपनी जिम्मेदारी समझते थे। पर पाश कोरी भावुकता वाले कवि नही थे– वे जानते थे कि विश्व का निर्माण एक कार्य–कारण श्रृंखला के अंतर्गत हुआ है। इसलिए अगर जुल्म होगा तो उसका प्रतिकार भी होगा– चाहे उसका रूप कोई भी हो। 'बेदखली के लिए विनय–पत्र' इंदिरा गाँधी की हत्या पर लिखी पाश की एक महत्वपूर्ण कविता है जिसमें वे कहते हैं–

'मैं खूब जानता हूँ नीले सागरों तक फैले हुए
इस खेतों, खानों, भट्ठों के भारत को
वह ठीक इसी का साधारण–सा एक कोना था
जहाँ पहली बार
जब दिहाड़ी मजदूर पर उठा थप्पड़ मरोड़ा गया
किसी के खुरदरे बेनाम हाथों में
ठीक वही वक्त था
जब इस कत्ल की साजिश रची गई।'[13]

जब कारण जायज हो तो परिणाम पर प्राश्यचित करने का कोई औचित्य नही। पाश कोई चालाक राजनेता नही थे जो जीवन भर अपने जिन विरोधियों के ऊपर देश–द्रोह तक के इल्जाम लगाते रहते हैं, उनकी मृत्यु के बाद श्रद्धांजलि देते हुए उन्हे ही सबसे महान राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ और देश–भक्त बताते हैं। इसी कविता में आगे वे बड़ी साफगोई और निर्भीकता से कहते हैं–

'मैने उम्र–भर उसके खिलाफ सोचा और लिखा है
अगर उसके शोक में सारा देश ही शामिल है
तो इस देश से मेरा नाम खारिज कर दें।'[14]

देश की चुनी हुई सरकार को गुंडो की सल्तनत कहने और उसका नागरिक होने पर थूकने के लिए कहने पर किसी को भी देश–द्रोही या राज–द्रोही कहा जा सकता है। पाश इस खतरे से भी वाकिफ थे, इसलिए तो कहते हैं–

'मुझे देश–द्रोही भी कहा जा सकता है
लेकिन मैं सच कहता हूँ, यह देश अभी मेरा नही है
यह तो अभी कुछ ही 'आदमियों' का है।'[15]

ध्यान देने की बात यह है कि भगतसिंह भी मुट्ठी भर परजीवियों के हाथों शोषित होने वाली भारतीय जनता की बात कह कर ऐसी ही परिस्थितियों का वर्णन कर रहे थे और पाश भी उन 'कुछ आदमियों' के देश की बात कर रहे थे जो पालतू मगरमच्छों की तरह दाँत गड़ाए बैठे हैं–

'और हम अभी आदमी नही हैं, बड़े निरीह पशु हैं
हमारे जिस्म में जोंको ने नहीं
पालतू मगरमच्छों ने गहरे दाँत गड़ाए हैं।'[16]

अब चाहे भगतसिंह हो या पाश मगरमच्छों के दाँत तोड़ने का एक ही तरीका है– क्रांति का। पर सच्चाई यह भी है कि कोई भी शासन–व्यवस्था न क्रांति को पसंद करती है न क्रांतिकारी को। इसीलिए भगतसिंह आज भी सरकारी फाइलों में न शहीद है, न क्रांतिकारी– हाँ, कहीं–कहीं आतंकवादी अवश्य हैं। क्रांतिकारी और आतंकवादी के बीच की जो विभाजक रेखा है और उसे न समझने के जो खतरे हैं भगतसिंह और उनके क्रांतिकारी साथी इसे जानते थे और यह भी कि भविष्य में इस कारण उन्हे किस तरह से परिभाषित किया जा सकता है। इसलिए उन्होनें लिखा– 'आतंकवाद और अराजकतावाद आज भारत में ये दोनो शब्द अत्यंत ही दुष्टतापूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये दोनो शब्द अक्सर वहाँ प्रयोग किए जा रहे हैं, जहाँ क्रांतिकारी शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि क्रांतिकारियों का ध्वंस करने या उन्हे बदनाम करने के लिए इन शब्दों का उपयोग करना उनके लिए अत्यंत ही सुविधाजनक/लाभदायक है। भारतीय क्रांतिकारी न तो आतंकवादी है और न ही अराजक।'[17]

दुनिया की किसी भी शासन–व्यवस्था की आदर्श और पसंदीदा विचारधारा है– गाँधीवाद। गाँधीवाद, जो एक गाल पर थप्पड़ मारने पर दूसरा गाल सामने करने और ऐसा करके शांति, अहिंसा स्थापित करने और शत्रु के हृदय परिवर्तन करने की बात करती है। पर यह कोई मानवतावाद नही है। पाश ने भगतसिंह के लिए कहा था–'वह पहला पंजाबी था जिसने गाँधीवाद के खोखलेपन व पिलपिले मानववाद, आदर्शवाद को चुनौती दी।'[18] इसी चुनौती को आगे बढ़ाते हुए पाश अपने या किसी भी कमजोर प्राणी पर हाथ उठाने वाले हर हाथ को मरोड़ देना, तोड़ देना जानते थे क्योंकि अपने दूसरे गाल पर थप्पड़ खा लेना अहिंसा नही है और अपने ऊपर उठने वाले हाथ को रोक देना हिंसा नही है। हिंसा है– कमजोर पर हाथ उठाना, जैसा कि भगतसिंह मानते थे– 'हिंसा का अर्थ है वह ताकत जो आक्रमक तरीके से इस्तेमाल की जाए– अतः नैतिक तौर पर यह भले ही अनुचित है पर जब यह एक सही उद्देश्य के लिए इस्तेमाल की जाए तो यह नैतिक रूप से उचित है।'[19] इसी मानवतावादी सोच के कारण पाश काव्य में लिखते हैं–

'हाथ यदि हों तो
हीर के हाथ से चूरी पकड़ने के लिए ही नही होते
सैदे की बारात रोकने के लिए भी होते हैं
कैदों की कमर तोड़ने के लिए भी होते हैं
हाथ श्रम करने के लिए ही नही होते
शोषक हाथों को तोड़ने के लिए भी होते हैं।'[20]

भगतसिंह के विचारों और पाश का काव्य पढ़ने पर अद्‌भुत साम्य दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे भगतसिंह के राजनीतिक विचारों की साहित्यिक अभिव्यक्ति है– पाश का काव्य। अपनी काव्य–चेतना और कला–साधना से पाश ने भगतसिंह की वैचारिक परंपरा को सही मायने में आगे बढ़ाया है।

संदर्भ–ग्रंथ

1. वर्तमान के रू–ब–रू पाश – संपादन डॉ. चमन लाल – पृष्ठ 17
2. वर्तमान के रू–ब–रू पाश – संपादन डॉ. चमन लाल – पृष्ठ 83
3. भगत सिंह को फाँसी – मलवेन्दरजीत सिंह वढ़ैच और गुरूदेव सिंह सिद्धू – पृष्ठ 243
4. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 78
5. भगत सिंह को फाँसी – मलवेन्दरजीत सिंह वढ़ैच और गुरूदेव सिंह सिद्धू – पृष्ठ 10
6. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 45
7. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 29
8. समय ओ भाई समय – पाश – पृष्ठ 95
9. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 38
10. समय ओ भाई समय – पाश – पृष्ठ 43
11. समय ओ भाई समय – पाश – पृष्ठ 32
12. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 163
13. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 186
14. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 186
15. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 48
16. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 48
17. भगत सिंह को फाँसी – मलवेन्दरजीत सिंह वढ़ैच और गुरूदेव सिंह सिद्धू – पृष्ठ 204–205
18. वर्तमान के रू–ब–रू पाश – संपादन डॉ. चमन लाल – पृष्ठ 17
19. भगत सिंह को फाँसी – मलवेन्दरजीत सिंह वढ़ैच और गुरूदेव सिंह सिद्धू – पृष्ठ 8
20. बीच का रास्ता नहीं होता – पाश – पृष्ठ 76